24.04.2020

आज का विषय है
विद्यालय प्रबन्धन –अर्थ आवश्यकता एवं महत्व

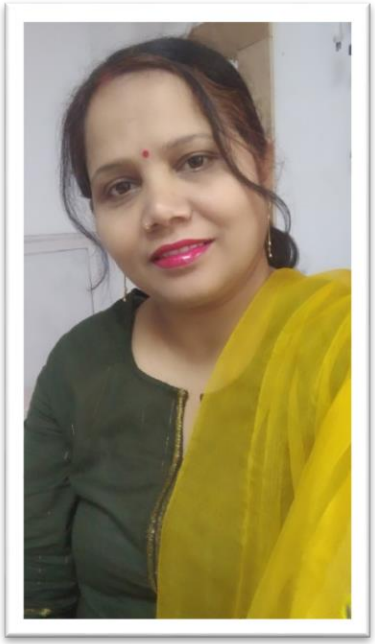

अर्चना पाण्डेय
प्रवक्ता
शिक्षा शास्त्र

प्रबन्धन

प्रबन्धन का जन्म सभ्यताओ के काल में हुआ था| तब से आज तक कि सभी व्यवस्थाएं प्रबन्ध हैं |

- प्रबन्ध कि वर्तमान अवधारणा - १९वीं सदी कि देन है
- प्रबन्ध शब्द का प्रथम प्रयोग - फ.डब्लू. टेलर ने किया

- प्रबन्ध के जनक – हेनरी फेयोल
- प्रबन्ध के गुरु - पीटर ड्रेकर
- भारत में प्रबन्ध कि शुरुवात – २०वीं सदी में हुई
- भारत में प्रबन्ध का श्रेय –अरिंदम चौधरी

संगठन छोटा हो या बड़ा उसे प्रबन्धन की आवश्यकता होती है और श्रेष्ठ प्रबन्धन ही संगठन को सफल बनाता है , इसीलिए –

“प्रबन्धन को संगठन का मष्तिष्क कहते हैं |”

विद्यालय प्रबन्धन –अर्थ,आवश्यकता एवं महत्व

शिक्षा जीवन-पर्यंत चलने वाली प्रक्रिया है| इस प्रक्रिया कि सफलता उत्तम प्रबन्धन पर निर्भर करती है |

ओलिवर शैल्देन के शब्दों में –"प्रबन्धन विद्यालय की वह जीवनदायिनी शक्ति है जो संगठन को शक्ति देता है , संचालित करता है एवं नियंत्रित करता है |"

प्रबन्धन एक व्यापक प्रक्रिया तथा कार्य है जिसमें निम्नलिखित तत्व सम्मिलित हैं -

- * नियोजन
- * संगठन
- * प्रशासन
- * निर्देशन
- * नियंत्रण

विद्यालय प्रबन्धन का अर्थ

विद्यालय प्रबन्धन से आशय है – विद्यालय के विशिष्ट उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए प्रयासों को नियोजित,
समन्वित, अभिप्रेरित एवं नियंत्रित करना तथा मानवीय एवं भौतिक स्रोतों में समन्वय स्थापित करना है |

शैक्षिक प्रभंधन की अवधारणा

- लुथिर गुलिक का POSDCORB सूत्र निम्नलिखित कार्यों को इंगित करता है –

- P– योजना बनाना
- O–संगठन
- S– कर्मचारी
- D– निर्देशन
- CO– समन्वय
- R– लेखा
- B- आय-व्यय

शैक्षिक प्रबन्धन के कार्य :-

प्रमुख कार्य :-

- *योजना बनाना
- *संगठन
- *संचालन
- *समन्वय स्थापित
- *अभिप्रेरणा –” प्रबन्धन का ह्रदय “
- *नियंत्रण

सहायक कार्य :-

*सम्प्रेषण

*नवाचार

*निर्णय-बौद्धिक कार्य

*प्रतिनिधित्व

विद्यालय स्तर पर शैक्षिक प्रबन्धन के साधन :-

मानवीय साधन	भौतिक साधन
१.प्रधानाध्यापक – सर्वोच्च	१. भवन
२.शिक्षक – विद्यालय का नाड़ी तंत्र	२. फर्नीचार
३.लिपिक वर्ग	३. सहायक सामग्री
४.बालक	४. पुस्तकालय
५.अभिभावक	
६.स्थानीय समुदाय	

विद्यालय स्तर पर शैक्षिक प्रबन्धन के साधन :-

मानवीय साधन	भौतिक साधन
१.प्रधानाध्यापक – सर्वोच्च	१. भवन
२.शिक्षक – विद्यालय का नाड़ी तंत्र	२. फर्नीचार
३.लिपिक वर्ग	३. सहायक सामग्री
४.बालक	४. पुस्तकालय
५.अभिभावक	
६.स्थानीय समुदाय	

एक सफल एवं प्रभावशाली विद्यालय प्रबन्धन में निम्न विशेषताएं होनी चाहिए -

- * विद्यालय प्रबन्धन में लचीलापन हो|
- * विद्यालय प्रबन्धन में व्यावहारिकता हो|
- * राष्ट्र की सामाजिक,तथा दार्शनिक एवं मूल्यों के अनुरूप हो |
- * विद्यालय प्रबन्धन में सक्षमता हो |
- * शिक्षा के अपेक्षित उद्देश्यों कि प्राप्ति हेतु समन्वित प्रयास हों |

विद्यालय प्रबन्धन के उद्देश्य :-

- * शिक्षाविदों द्वारा बनाए गए लक्ष्यों कि निष्ठापूर्वक पूर्ति
- * मिल-जुलकर रहने की कला सिखाना
- * विद्यालय सम्बन्धी गतिविधियों तथा कार्यों का संचालन तथा संयोजन
- * विद्यालय में सहयोग की भावना लाना तथा जटिल कार्यों की सुलभता
- * विद्यालय को सामुदायिक केंद्र के रूप में बनाना
- * शिक्षा सम्बंधी प्रयोग तथा अनुशासन के लए समुचित व्यवस्था करना |

विद्यालय प्रबन्धन के कार्य

- * विद्यालय प्रबन्धन के उद्देश्यों का निर्माण
- * अध्यापक वर्ग के कार्य में समन्वय
- * विद्यार्थियों का वर्गीकरण एवं सामूहीकरण
- * पाठ्यक्रम सहगामी कार्यक्रमों का क्रमिक संगठन
- * पाठ्यक्रम नियोजन एवं कार्य विभाजन
- * विभिन्न सेवाएं जैसे- भवन एवं उपकरण,प्रयोगशाला,
- पुस्तकालय ,स्वच्छता आदि का प्रबन्ध -
- * विद्यालय का अनुशासन बनाए रखना |
- * स्वच्छता एवं स्वस्थ शिक्षा के लिए कार्यक्रम का गठन करना
- * विद्यालय के कार्यालय की देखभाल
- * विद्यालय का बजट बनाना
- * विद्यालय एवं समाज के कार्यों का समन्वय

- * विद्यार्थियों को समाज सेवा के कार्यों में लगाना
- * बच्चों में मिलकर कार्य करने की भावना विकसित करना
- * छात्रों की उपलब्धि का मूल्यांकन करना
- * अध्यापको की योग्यता के अनुसार कार्य विभाजन करना
- * विद्यालय की नीतियों को आधुनिक शैक्षिक दर्शन के अनुरूप बनाना
- * विभागीय अधिकारियों से सहयोग का आदान प्रदान करना|
- * विद्यालय नीतियों और अध्यापकों के कर्त्तव्य पालन में सामंजस्य होना |

प्रबन्धन का महत्व

* पूर्व निर्धारित लक्ष्य प्राप्ति
* कार्य नियोजन एवं संगठन
* कर्मचारियों में समन्वय
* मानवीय एवं भौतिक संसाधनों का प्रयोग
* शिक्षा के अपव्यय को रोकना
* शिक्षा के उद्देश्यों को पूरा करने के लए मानव समूह बनाना
- समय समय पर नवाचारों का ग्रहण करना
- **<u>निष्कर्षतः</u> हम कह सकते हैं की यदि किसी विद्यालय का प्रबन्ध तंत्र उत्तम है तो उस विद्यालय से निकलने वाले छात्रों की उपलब्धि भी उत्तम एवं प्रभावशाली होगी जो अपने विद्यालय, देश,परिवार व समाज का मस्तक ऊँचा रखते हुए अपने उच्चतम गंतव्य को प्राप्त कर सकेंगे।**

विद्यालय प्रबन्धन को निम्नलिखित तथ्यों का अनुसरण व पालन करना चाहिए -

- * शिक्षा का प्रजातान्त्रिक दर्शन
- * योग्यता एवं क्षमता के अनुरूप कार्य की स्वतंत्रता
- * शिक्षा प्रक्रिया छात्र – केंद्रित
- * विद्यालय प्रबन्धन उद्देश्य – केंद्रित
- * लचीलापन,अनुकूलन तथा स्थायित्व